

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ

Surah 29 — Al-Ankaboot (The Spider) • Meccan • 69 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अलिफ़ लाम मीम

2

أَحْسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا ۖ ءَامَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ

क्या लोगों ने ये समझ लिया है कि (सिर्फ) इतना कह देने से कि हम ईमान लाए छोड़ दिए जाएंगे और उनका इम्तेहान न लिया जाएगा

3

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا ۖ وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ

और हमने तो उन लोगों का भी इम्तिहान लिया जो उनसे पहले गुज़र गए शरज़ खुदा उन लोगों को जो सच्चे (दिल से ईमान लाए) हैं यकीनन अलहाएदा देखेगा और झूठों को भी (अलहाएदा) ज़रूर देखेगा

4

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا ۖ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ

क्या जो लोग बुरे बुरे काम करते हैं उन्होंने ये समझ लिया है कि वह हमसे (बचकर) निकल जाएंगे (अगर ऐसा है तो) ये लोग क्या ही बुरे हुक्म लगाते हैं

5

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

जो शख्स खुदा से मिलने (क्रियामत के आने) की उम्मीद रखता है तो (समझ रखे कि) खुदा की (मुकर्रर की हुई) मीयाद ज़रूर आने वाली है और वह (सबकी) सुनता (और) जानता है

6

وَمَنْ جَاهَدْ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ

और जो शख्स (इबादत में) कोशिश करता है तो बस अपने ही वास्ते कोशिश करता है (क्योंकि) इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा सारे जहाँ (की इबादत) से बेनियाज़ है

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ
الَّذِي كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ ۚ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए हम यकीनन उनके गुनाहों की तरफ से कफ़ारा करार देंगे और ये (दुनिया में) जो आमाँल करते थे हम उनके आमाँल की उन्हें अच्छी से अच्छी जज़ा अता करेंगे

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَلَدَيْهِ حُسْنًا ۚ وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ ۚ عِلْمٌ ۚ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ

और हमने इन्सान को अपने माँ बाप से अच्छा बरताव करने का हुक्म दिया है और (ये भी कि) अगर तुझे तेरे माँ बाप इस बात पर मजबूर करें कि ऐसी चीज़ को मेरा शरीक बना जिन (के शरीक होने) का मुझे इल्म तक नहीं तो उनका कहना न मानना तुम सबको (आखिर एक दिन) मेरी तरफ लौट कर आना है मैं जो कुछ तुम लोग (दुनिया में) करते थे बता दूँगा

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۚ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए हम उन्हें (क़यामत के दिन) ज़रूर नेको कारों में दाखिल करेंगे

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ ءَامَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ ۚ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي
صُدُورِ الْعُلَمَاءِ ۚ

और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो (ज़बान से तो) कह देते हैं कि हम खुदा पर ईमान लाए फिर जब उनको खुदा के बारे में कुछ तकलीफ़ पहुँची तो वह लोगों की तकलीफ़ देही को अज़ाब के बराबर ठहराते हैं और (ऐ रसूल) अगर तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की मदद आ पहुँची और तुम्हें फतेह हुई तो यही लोग कहने लगते हैं कि हम भी तो तुम्हारे साथ ही साथ थे भला जो कुछ सारे जहाँ के दिलों में है क्या खुदा बखूबी वाक़िफ नहीं (ज़रूर है)

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنْفِقِينَ ۚ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया खुदा उनको यकीनन जानता है और मुनाफ़ेकीन को भी ज़रूर जानता है

12

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّبِعُوا ۚ سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ

और कुफ़्फार ईमान वालों से कहने लगे कि हमारे तरीके पर चलो और (क़यामत में) तुम्हारे गुनाहों (के बोझ) को हम (अपने सर) ले लेंगे हालाँकि ये लोग ज़रा भी तो उनके गुनाह उठाने वाले नहीं ये लोग यक़ीनी झूठे हैं

13

وَلْيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا ۚ مَعَ أَثْقَالِهِمْ ۚ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَمَّا كَانُوا ۚ يَفْتَرُونَ

और (हाँ) ये लोग अपने (गुनाह के) बोझ तो यक़ीनी उठाएँगे ही और अपने बोझों के साथ जिन्हें गुमराह किया उनके बोझ भी उठाएँगे और जो इफ़ितेरा परदाज़िया ये लोग करते रहे हैं क़यामत के दिन उन से ज़रूर उसकी बाज़पुर्स होगी

14

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ ۚ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا ۚ فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ

और हमने नूह को उनकी क्रौम के पास (पैग़म्बर बनाकर) भेजा तो वह उनमें पचास कम हज़ार बरस रहे (और हिदायत किया किए और जब न माना) तो आख़िर तूफ़ान ने उन्हें ले डाला और वह उस वक्त भी सरकश ही थे

15

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً ۚ لِلْعَالَمِينَ

फिर हमने नूह और कश्ती में रहने वालों को बचा लिया और हमने इस वाक़िये को सारी खुदाई के वास्ते (अपनी कुदरत की) निशानी क़रार दी

16

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا ۚ اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ ۚ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

और इबराहीम को (याद करो) जब उन्होंने कहा कि (भाईयों) खुदा की इबादत करो और उससे डरो अगर तुम समझते बूझते हो तो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا ۖ عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا ۚ لَهُ ۚ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

(मगर) तुम लोग तो खुदा को छोड़कर सिर्फ बुतों की परसतिश करते हैं और झूठी बातें (अपने दिल से) गढ़ते हो इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा को छोड़कर जिन लोगों की तुम परसतिश करते हो वह तुम्हारी रोज़ी का एख्तेयार नहीं रखते-बस खुदा ही से रोज़ी भी माँगों और उसकी इबादत भी करो उसका शुक्र करो (क्योंकि) तुम लोग (एक दिन) उसी की तरफ लौटाए जाओगे

وَإِنْ تَكْذِبُوا ۖ فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ ۖ مِّن قَبْلِكُمْ ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا أَلْبَلُغُ الْمُبِينِ

और (ऐ अहले मक्का) अगर तुमने (मेरे रसूल को) झुठलाया तो (कुछ परवाह नहीं) तुमसे पहले भी तो बहुतेरी उम्मतें (अपने पैगम्बरों को) झुठला चुकी हैं और रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ (एहक़ाम का) पहुँचा देना है

أَوَلَمْ يَرَوْا ۖ كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ

बस क्या उन लोगों ने इस पर गौर नहीं किया कि खुदा किस तरह मखलूक़ात को पहले पहल पैदा करता है और फिर उसको दोबारा पैदा करेगा ये तो खुदा के नज़दीक बहुत आसान बात है

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا ۖ كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

(ऐ रसूल इन लोगों से) तुम कह दो कि ज़रा रुए ज़मीन पर चलफिर कर देखो तो कि खुदा ने किस तरह पहले पहल मखलूक़ को पैदा किया फिर (उसी तरह वही) खुदा (क़यामत के दिन) आखिरी पैदाइश पैदा करेगा- बेशक खुदा हर चीज़ पर कादिर है

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۚ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ

जिस पर चाहे अज़ाब करे और जिस पर चाहे रहम करे और तुम लोग (सब के सब) उसी की तरफ लौटाए जाओगे

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۚ

और न तो तुम ज़मीन ही में खुदा को ज़ेर कर सकते हो और न आसमान में और खुदा के सिवा न तो तुम्हारा कोई सरपरस्त है और न मददगार

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ ۖ أُولَٰئِكَ يُسْأَوْنَ ۖ مِنْ رَحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

और जिन लोगों ने खुदा की आयतों और (क़यामत के दिन) उसके सामने हाज़िर होने से इन्कार किया मेरी रहमत से मायूस हो गए हैं और उन्हीं लोगों के वास्ते दर्दनाक अज़ाब है

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ ۖ إِلَّا أَنْ قَالُوا ۖ أَقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنْجَبَهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۖ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

गरज़ इबराहीम की क़ौम के पास (इन बातों का) इसके सिवा कोई जवाब न था कि बाहम कहने लगे इसको मार डालो या जला (कर खाक) कर डालो (आखिर वह कर गुज़रे) तो खुदा ने उनको आग से बचा लिया इसमें शक नहीं कि दुनियादार लोगों के वास्ते इस वाकिये में (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَنًا ۖ مَوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ ۚ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا ۖ وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَصِيرِينَ

और इबराहीम ने (अपनी क़ौम से) कहा कि तुम लोगों ने खुदा को छोड़कर बुतों को सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी में बाहम मोहब्त करने की वजह से (खुदा) बना रखा है फिर क़यामत के दिन तुम में से एक का एक इनकार करेगा और एक दूसरे पर लानत करेगा और (आखिर) तुम लोगों का ठिकाना जहन्नुम है और (उस वक्त तुम्हारा कोई भी मददगार न होगा)

﴿ فَآمَنَ لَهُ ﴾ ﴿ لُوطٌ ﴾ ﴿ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ﴾ ﴿ إِنَّهُ ﴾ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

तब सिर्फ लूत इबराहीम पर ईमान लाए और इबराहीम ने कहा मैं तो देस को छोड़कर अपने परवरदिगार की तरफ (जहाँ उसको मंज़ूर हो) निकल जाऊँगा

وَوَهَبْنَا لَهُ ﴿ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَءَاتَيْنَاهُ أُجْرَهُ ﴾ ﴿ فِي الدُّنْيَا ﴾ ﴿ وَإِنَّهُ ﴾ فِي آخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ

इसमे शक नहीं कि वह ग़ालिब (और) हिकमत वाला है और हमने इबराहीम को इसहाक (सा बेटा) और याकूब (सा पोता) अता किया और उनकी नस्ल में पैग़म्बरी और किताब करार दी और हम न इबराहीम को दुनिया में भी अच्छा बदला अता किया और वह तो आखेरत में भी यक़ीनी नेको कारों से हैं

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ ﴿ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْفُحْشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ ﴾ ﴿ مِنَ الْعَالَمِينَ

(और ऐ रसूल) लूत को (याद करो) जब उन्होंने अपनी क्रौम से कहा कि तुम लोग अजब बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले सारी खुदायी के लोगों में से किसी ने नहीं किया

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيَكُمُ الْمُنْكَرَ ﴿ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ ﴾ ﴿ إِلَّا أَنْ قَالُوا ﴿ أَتُنَبِّئُنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ

तुम लोग (औरतों को छोड़कर कज़ाए शहवत के लिए) मर्दों की तरफ गिरते हो और (मुसाफ़िरो की) रहजनी करते हो और तुम लोग अपनी महफ़िलों में बुरी बुरी हरकते करते हो तो (इन सब बातों का) लूत की क्रौम के पास इसके सिवा कोई जवाब न था कि वह लोग कहने लगे कि भला अगर तुम सच्चे हो तो हम पर खुदा का अज़ाब तो ले आओ

قَالَ رَبِّ أَنْصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ

तब लूत ने दुआ की कि परवरदिगार इन मुफ़सिद लोगों के मुक्राबले में मेरी मदद कर

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا ۖ إِنَّا مُهْلِكُوا ۚ أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ إِنَّا أَهْلُهَا كَانُوا ۚ ظَلَمِينَ

(उस वक्त अज़ाब की तैयारी हुई) और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते इबराहीम के पास (बुढ़ापे में बेटे की) खुशखबरी लेकर आए तो (इबराहीम से) बोले हम लोग अनक़रीब इस गाँव के रहने वालों को हलाक करने वाले हैं (क्योंकि) इस बस्ती के रहने वाले यक्कीनी (बड़े) सरकश है

قَالَ إِن فِيهَا لُوطٌ ۚ قَالُوا ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۚ لَنُنَجِّيَنَّهُ ۚ وَأَهْلَهُ ۚ إِلَّا أُمَّرَأَتَهُ ۚ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ

(ये सुन कर) इबराहीम ने कहा कि इस बस्ती में तो लूत भी है वह फरिश्ते बोले जो लोग इस बस्ती में हैं हम लोग उनसे खूब वाकिफ़ हैं हम तो उनको और उनके लड़के वालों को यक्कीनी बचा लेंगे मगर उनकी बीबी को वह (अलबता) पीछे रह जाने वालों में होगी

وَلَمَّا أَن جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطٌ ۚ سَاءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا ۚ وَقَالُوا ۚ لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۚ إِنَّا مُنْجُوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا أُمَّرَأَتَكَ ۚ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ

और जब हमारे भेजे हुए फरिश्ते लूत के पास आए लूत उनके आने से ग़मगीन हुए और उन (की मेहमानी) से दिल तंग हुए (क्योंकि वह नौजवान खूबसूरत मर्दों की सरूत में आए थे) फरिश्तों ने कहा आप खौफ न करें और कुढ़े नही हम आपको और आपके लड़के वालों को बचा लेंगे मगर आपकी बीबी (क्योंकि वह पीछे रह जाने वालो से होगी)

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا ۚ مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا ۚ يَفْسُقُونَ

हम यक्कीनन इसी बस्ती के रहने वालों पर चूँकि ये लोग बदकारियाँ करते रहे एक आसमानी अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं

وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً ۚ بَيِّنَةً ۚ لِّقَوْمٍ ۚ يَعْقِلُونَ

और हमने यक्कीनी उस (उलटी हुई बस्ती) में से समझदार लोगों के वास्ते (इबरत की) एक वाज़ेए व रौशन निशानी बाक़ी रखी है

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ قَالَ يَبْنَؤُا عِبْدُوا ٱللَّهَ وَارْجُوا ۖ ٱلْيَوْمَ ٱلْءَاخِرَ وَلَا تَعْتُوا ۖ فِى ٱلْأَرْضِ مُفْسِدِينَ

और (हमने) मदीयन के रहने वालों के पास उनके भाई शुएब को पैग़म्बर बनाकर भेजा उन्होंने (अपनी क़ौम से) कहा ऐ मेरी क़ौम खुदा की इबादत करो और रोज़े आख़ेरत की उम्मीद रखो और रूए ज़मीन में फ़साद न फैलाते फ़िरो

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ ٱلرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِى دَارِهِمْ جِثْمِينَ

तो उन लोगों ने शुएब को झुठलाया पस ज़लज़ले (भूचाल) ने उन्हें ले डाला- तो वह लोग अपने घरों में औंधे ज़ानू के बल पड़े रह गए

وَعَادًا ۖ وَثَمُودًا ۖ وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسْكِنِهِمْ ۖ وَزَيْنَ لَهُمُ ٱلشَّيْطٰنُ أَعْمٰلُهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ ٱلسَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ

और क़ौम आद और समूद को (भी) हलाक कर डाला) और (ऐ अहले मक्का) तुम को तो उनके (उजड़े हुए) घर भी (रास्ता आते जाते) मालूम हो चुके और शैतान ने उनकी नज़र में उनके कामों को अच्छ्हा कर दिखाया था और उन्हें (सीधी) राह (चलने) से रोक दिया था हालाँकि वह बड़े होशियार थे

وَقُرُونًا وَفِرْعَوْنَ وَهَمٰنَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُّوسَىٰ بِٱلْبَيِّنٰتِ فَأَسْتَكْبَرُوا ۖ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَبْقِينَ

और (हम ही ने) क़ारून व फिरऔन व हामान को भी (हलाक कर डाला) हालाँकि उन लोगों के पास मूसा वाजेए व रौशन मौजिज़े लेकर आए फिर भी ये लोग रूए ज़मीन में सरकशी करते फ़िरे और हमसे (निकल कर) कहीं आगे न बढ़ सके

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذُنِّهِ ۖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ
الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

तो हमने सबको उनके गुनाह की सज़ा में ले डाला चुनान्चे उनमे से बाज़ तो वह थे जिन पर हमने पत्थर वाली आँधी भेजी और बाज़ उनमें से वह थे जिन को एक सख्त चिंघाड़ ने ले डाला और बाज़ उनमें से वह थे जिनको हमने ज़मीन मे धँसा दिया और बाज़ उनमें से वह थे जिन्हें हमने डुबो मारा और ये बात नहीं कि खुदा ने उन पर जुल्म किया हो बल्कि (सच युं है कि) ये लोग खुद (खुदा की नाफ़रमानी करके) आप अपने ऊपर जुल्म करते रहे

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنَ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنَكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بِئْتًا ۖ وَإِنَّ
أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنَكَبُوتِ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

जिन लोगों ने खुदा के सिवा दूसरे कारसाज़ बना रखे हैं उनकी मसल उस मकड़ी की सी है जिसने (अपने ख्याल नाक़िस में) एक घर बनाया और उसमें तो शक ही नहीं कि तमाम घरों से बोदा घर मकड़ी का होता है मगर ये लोग (इतना भी) जानते हो

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ ۚ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

खुदा को छोड़कर ये लोग जिस चीज़ को पुकारते हैं उससे खुदा यक़ीनी वाक़िफ है और वह तो (सब पर) ग़ालिब (और) हिकमत वाला है

وَتِلْكَ الْأَمْثَلُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعُلَمَاءُ

और हम ये मिसाले लोगों के (समझाने) के वास्ते बयान करते हैं और उन को तो बस उलमा ही समझते हैं

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ لِلْمُؤْمِنِينَ

खुदा ने सारे आसमान और ज़मीन को बिल्कुल ठीक पैदा किया इसमें शक नहीं कि उसमें ईमानदारों के वास्ते (कुदरते खुदा की) यक़ीनी बड़ी निशानी है

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ
وَالْمُنكَرِ ۚ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ

(ऐ रसूल) जो किताब तुम्हारे पास नाज़िल की गयी है उसकी तिलावत करो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से बाज़ रखती है और खुदा की याद यकीनी बड़ा मरतबा रखती है और तुम लोग जो कुछ करते हो खुदा उससे वाकिफ है

ۚ وَلَا تُجَادِلُوا ۚ أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ مِنْهُمْ ۚ
وَقُولُوا ۚ ءَامَنَّا بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِلَهُنَا وَإِلَهُكُمْ وَاحِدٌ ۚ وَنَحْنُ لَهُ ۚ
مُسْلِمُونَ

और (ऐ ईमानदारों) अहले किताब से मनाज़िरा न किया करो मगर उमदा और शाएस्ता अलफाज़ व उनवान से लेकिन उनमें से जिन लोगों ने तुम पर जुल्म किया (उनके साथ रियायत न करो) और साफ साफ कह दो कि जो किताब हम पर नाज़िल हुई और जो किताब तुम पर नाज़िल हुई है हम तो सब पर ईमान ला चुके और हमारा माबूद और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फरमाबरदार हैं

وَكَذَلِكَ أُنْزِلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۚ فَالَّذِينَ ءَاتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ ۚ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَن
يُؤْمِنُ بِهِ ۚ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ

और (ऐ रसूल जिस तरह अगले पैग़म्बरों पर किताबें उतारी) उसी तरह हमने तुम्हारे पास किताब नाज़िल की तो जिन लोगों को हमने (पहले) किताब अता की है वह उस पर भी ईमान रखते हैं और (अरबों) में से बाज़ वह हैं जो उस पर ईमान रखते हैं और हमारी आयतों के तो बस पक्के कट्टर काफिर ही मुनकिर हैं

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوا ۚ مِنْ قَبْلِهِ ۚ مِنْ كِتَابٍ ۚ وَلَا تَخُطُّهُ ۚ بِيَمِينِكَ ۚ إِذْ ۚ لَا رَتَابَ
الْمُبْطِلُونَ

और (ऐ रसूल) कुरान से पहले न तो तुम कोई किताब ही पढ़ते थे और न अपने हाथ से तुम लिखा करते थे ऐसा होता तो ये झूठे ज़रूर (तुम्हारी नबुवत में) शक करते

بَلْ هُوَ ءَايَاتٌ ۚ بَيِّنَاتٌ ۚ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْعِلْمَ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا
الظَّالِمُونَ

मगर जिन लोगों को (खुदा की तरफ से) इल्म अता हुआ है उनके दिल में ये (कुरान) वाजेए व रौशन आयतें हैं और सरकशी के सिवा हमारी आयतो से कोई इन्कार नहीं करता

وَقَالُوا ۚ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ ءَايَاتٌ ۚ مِّن رَّبِّهِ ۚ ۚ قُلْ إِنَّمَا أَلْءَايَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا ۚ
نَذِيرٌ ۚ مُّبِينٌ

और (कुफ़ार अरब) कहते हैं कि इस (रसूल) पर उसके परवरदिगार की तरफ से मौजिजे क्यों नहीं नाज़िल होते (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि मौजिजे तो बस खुदा ही के पास हैं और मैं तो सिर्फ साफ साफ (अज़ाबे खुदा से) डराने वाला हूँ

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً ۚ وَذِكْرَىٰ
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

क्या उनके लिए ये काफी नहीं कि हमने तुम पर कुरान नाज़िल किया जो उनके सामने पढ़ा जाता है इसमें शक नहीं कि ईमानदार लोगों के लिए इसमें (खुदा की बड़ी) मेहरबानी और (अच्छी खासी) नसीहत है

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدٌ ۚ ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَالَّذِينَ
ءَامَنُوا ۚ بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا ۚ بِاللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ

तुम कह दो कि मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाही के वास्ते खुदा ही काफी है जो सारे आसमान व ज़मीन की चीज़ों को जानता है-और जिन लोगों ने बातिल को माना और खुदा से इन्कार किया वही लोग बड़े घाटे में रहेंगे

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ ۚ وَلَوْلَا أَجَلٌ ۚ مُّسَمًّى ۚ لَّجَاءَهُمُ الْعَذَابُ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً ۚ
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

और (ऐ रसूल) तुमसे लोग अज़ाब के नाज़िल होने की जल्दी करते हैं और अगर (अज़ाब का) वक्त मुअय्यन न होता तो यकीनन उनके पास अब तक अज़ाब आ जाता और (आखिर एक दिन) उन पर अचानक ज़रूर आ पड़ेगा और उनको खबर भी न होगी

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ ۝ بِالْكَافِرِينَ

ये लोग तुमसे अज़ाब की जल्दी करते हैं और ये यक़ीनी बात है कि दोज़ख़ काफ़िरो को (इस तरह) घेर कर रहेगी (कि रुक न सकेंगे)

يَوْمَ يَغْشَاهُمْ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ نُوقُوا ۝ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

जिस दिन अज़ाब उनके सर के ऊपर से और उनके पाँव के नीचे से उनको ढाँके होगा और खुदा (उनसे) फरमाएगा कि जो जो कारस्तानियाँ तुम (दुनिया में) करते थे अब उनका मज़ा चखो

يُعْبَادِي الَّذِينَ ءَامَنُوا ۝ إِنَّ أَرْضِي وَسِعَةٌ ۝ فَأَيُّ فَاعِبُدُونَ

ऐ मेरे ईमानदार बन्दों मेरी ज़मीन तो यक़ीनन कुशादा है तो तुम मेरी ही इबादत करो

كُلُّ نَفْسٍ ۝ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۝ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ

हर शख्स (एक न एक दिन) मौत का मज़ा चखने वाला है फिर तुम सब आखिर हमारी ही तरफ लौटए जाओगे

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۝ وَعَمِلُوا ۝ الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا ۝ لَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۝ نِعْمَ أَجْرُ الْعَمِلِينَ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको हम बेहश्त के झरोखों में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें जारी हैं जिनमें वह हमेशा रहेंगे (अच्छे चलन वालो की भी क्या खूब ख़री मज़दूरी है)

الَّذِينَ صَبَرُوا ۝ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

जिन्होंने (दुनिया में मुसिबतों पर) सब्र किया और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं

وَكَايْنٍ مِّنْ دَابَّةٍ ۚ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

और ज़मीन पर चलने वालों में बहुतेरे ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी अपने ऊपर लादे नहीं फिरते खुदा ही उनको भी रोज़ी देता है और तुम को भी और वह बड़ा सुनने वाला वाकिफ़कार है

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولَنَّ اللَّهُ ۚ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ

(ऐ रसूल) अगर तुम उनसे पूछो कि (भला) किसने सारे आसमान व ज़मीन को पैदा किया और चाँद और सूरज को काम में लगाया तो वह ज़रूर यही कहेंगे कि अल्लाह ने फिर वह कहाँ बहके चले जाते हैं

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ

खुदा ही अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है इसमें शक नहीं कि खुदा ही हर चीज़ से वाकिफ़ है

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنَ الْغَيْثِ لَيَقُولَنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

और (ऐ रसूल) अगर तुम उससे पूछो कि किसने आसमान से पानी बरसाया फिर उसके ज़रिये से ज़मीन को इसके मरने (परती होने) के बाद ज़िन्दा (आबाद) किया तो वह ज़रूर यही कहेंगे कि अल्लाह ने (ऐ रसूल) तुम कह दो अल्हम दो लिल्लाह-मगर उनमें से बहुतेरे (इतना भी) नहीं समझते

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوٌّ ۚ وَلَعِبٌ ۚ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

और ये दुनिया की ज़िन्दगी तो खेल तमाशे के सिवा कुछ नहीं और मगर ये लोग समझें बूझें तो इसमें शक नहीं कि अबदी ज़िन्दगी (की जगह) तो बस आखिरत का घर है (बाक़ी लगो)

65

فَإِذَا رَكِبُوا[؟] فِي الْفُلِكِ دَعَوْا[؟] اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ

फिर जब ये लोग कश्ती में सवार होते हैं तो निहायत खुलूस से उसकी इबादत करने वाले बन कर खुदा से दुआ करते हैं फिर जब उन्हें खुशकी में (पहुँचा कर) नजात देता है तो फौरन शिर्क करने लगते हैं

66

لِيَكْفُرُوا[؟] بِمَا ءَاتَيْنَاهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا[؟] فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

ताकि जो (नेअमतें) हमने उन्हें अता की हैं उनका इन्कार कर बैठें और ताकि (दुनिया में) खूब चैन कर लें तो अनकरीब ही (इसका नतीजा) उन्हें मालूम हो जाएगा

67

أَوَلَمْ يَرَوْا[؟] أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا ءَامِنًا[؟] وَيَتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ[؟] أَفَبِالْبِطْلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ

क्या उन लोगों ने इस पर गौर नहीं किया कि हमने हरम (मक्का) को अमन व इत्मेनान की जगह बनाया हालाँकि उनके गिर्द व नवाह से लोग उचक ले जाते हैं तो क्या ये लोग झूठे माबूदों पर ईमान लाते हैं और खुदा की नेअमत की नाशुकी करते हैं

68

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ[؟] أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوً[؟] لِّلْكَافِرِينَ

और जो शख्स खुदा पर झूठ बोहतान बाँधे या जब उसके पास कोई सच्ची बात आए तो झुठला दे इससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा क्या (इन) काफिरों का ठिकाना जहन्नुम में नहीं है (ज़रूर है)

69

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا[؟] فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا[؟] وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ

और जिन लोगों ने हमारी राह में जिहाद किया उन्हें हम ज़रूर अपनी राह की हिदायत करेंगे और इसमें शक नहीं कि खुदा नेकोकारों का साथी है